परमात्मा का अवतरण कैसे जाना जाये...!!!

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

आजकल संसार की जो दुर्दशा है और यहाँ जो आसुरी लक्षण तथा तमोगुण की प्रधानता है और ज्ञान तथा योग का प्रायः लोप है, उस पर विचार करें तथा आज की परिस्थितियों का गीता से मेलान करके लोग यह तो सोचते हैं कि वर्तमान समय हूबहू वही परिस्थितियां हैं जो 5000 वर्ष पूर्व गीता के भगवान के अवतरण के समय थीं। अतः वह आज के समय को धर्मग्लानि का समय तो निश्चित करते हैं और यह भी मानते हैं कि गीता में भगवान के जो वचन हैं, उनके अनुसार अब धर्म की पुनःस्थापना के लिए परमात्मा को पुनः अवतरित होना चाहिए और अधर्म का विनाश भी कराना चाहिए। फिर जब उन्हें बताया ज ा त ा

है कि भगवन के अवतरित होने की जो तुम आशा लगाये बैठे हो, वह पूर्ण हो चुकी है और विनाश की सामग्री भी तैयार हो चुकी है। तो वे आश्चर्यान्वित होते हैं और प्रश्न करते हैं कि कैसे माना जाये कि भगवान अवतरित हो चुके हैं? अतः ऐसे महानुभावों के शुभचिन्तक होकर, निज अनुभव के आधार पर ईश्वरीय विवेक का आश्रय लेकर यहाँ कई-एक युक्तियां प्रस्तुत की जा रही हैं जिनके प्रयोग से यह जाना जा सकता है कि भगवान का अवतरण हुआ है या नहीं।

बात यह है कि परमात्मा का अवतरण क्योंकि धर्मग्लानि के समय होता है अतः उस समय बहुत से दम्भी लोग स्वयं को भगवान का अवतार कहने कहलाने लगते हैं। इस कारण, मनुष्य को कुछ युक्तियां ज्ञात होनी चाहिए कि जिनसे वह ठीक पहचान कर सकें ताकि वह छल में न आ जायें। यहाँ जो युक्तियां प्रस्तुत की जा रही हैं, वह ठीक हैं या नहीं, इसकी परख गीता के मेलान से, विवेक से तथा परम्परा के ज्ञान से सहज हो जाती है : -

भगवान कहते हैं कि यह सृष्टि वृक्ष के समान है और मैं इसका बीजरूप हूँ

यदि कोई दम्भी मनुष्य स्वयं को भगवान का अवतार कहलायेगा तो देखने योग्य बात यह है कि वह अपने को इस सृष्टि रूपी वृक्ष का बीजरूप नहीं कह सकेगा क्योंकि बीज में सारे वृक्ष का ज्ञान तिरोभावित होता है परन्तु मनुष्यात्माओं को सृष्टि रूपी रचना का ज्ञान स्वतः होता ही नहीं। बीज तो वृक्ष का रचयिता होता है किन्तु कोई भी मनुष्य स्वयं को सृष्टि का रचयिता नहीं कह सकता, कारण कि वह तो स्वयं ही एक रचना है। अतः केवल गीता के भगवान, जिन्होंने ही इस सृष्टि की तुलना एक उल्टे वृक्ष से की है, ही ने स्वयं को इस 'वृक्ष' का बीजरूप कहा है और इस 'वृक्ष' का पूर्ण ज्ञान भी दिया है। अन्य किसी भी धर्मस्थापक ने न यह उपमा दी है और न ही इस वृक्ष का ज्ञान दिया है क्योंकि वे(मनुष्यात्मायें) तो स्वतः इस सारे 'वृक्ष' को जानते ही नहीं, सर्वज्ञ हैं नहीं। अतः यदि कोई अपने को परमात्मा का अवतार कहता है तो उसे सृष्टि रूपी वृक्ष(रचना) का ज्ञान होना चाहिए।

भगवान ही आत्माओं के आवागमन को जानते हैं

भगवान, जो ही जन्म-मरण से रहित; साक्षी आत्मा हैं, सब धर्मों की आत्माओं के आवागमन को जानते हैं। वह ही बता सकते हैं कि आत्मा ने उसके अवतरण काल तक कितने जन्म लिए। अतः केवल गीता के भगवान ही कहते हैं- "हे वत्स, मैं तेरे पिछले जन्मों को जानता हूँ; तू नहीं जानता।" कोई भी मनुष्यात्मा अपने ही पिछले सारे जन्मों को नहीं जानती तो अन्य आत्माओं के जन्म जानने की तो बात ही दूर रही। अतः यदि स्वयं परमात्मा का अवतरण हुआ होगा तो वह मनुष्यात्माओं के पिछले जन्मों को भी जानता होगा और उनका भेद बताता होगा कि उन्होंने सतयुग, त्रेता, द्वापर इत्यादि में से हर एक युग में कितने जन्म लिए।

परमात्मा ही अपने तथा देवताओं के रूप, धाम, कर्त्तव्य इत्यादि का परिचय देता है

कोई भी मनुष्यात्मा देवताओं(ब्रह्मा, विष्णु, शंकर) का तथा परमात्मा का स्वतः ही परिचय नहीं दे सकती। इनका परिचय तथा रचयिता परमात्मा का ज्ञान तो परमात्मा स्वयं ही देता है। यही कारण है कि अन्य किसी भी धर्मस्थापक के शास्त्र में देवताओं का तथा परमात्मा के धाम, रूप इत्यादि का उल्लेख नहीं मिलेगा। एकमात्र गीता के भगवान ही हैं जो कहते हैं- "इस आकाश तत्व के पार जो अन्य अव्यक्त तत्व 'ब्रह्म'(अखण्ड ज्योति महतत्व है), मैं उस परमधाम में निवास करता हूँ, मैं अव्यक्त ज्योतिबिन्दु हूँ, इत्यादि-इत्यादि। यदि कोई मनुष्यात्मा दम्भयुक्त होकर ऐसा कहने का साहस करे तो भी आकाश के पार जो अव्यक्त, अविनाशी ज्योति महतत्व है, वह उसका और परमधाम का पूरा परिचय नहीं दे सकेगी, वहाँ आत्माओं और परमात्मा का जिस प्रकार निवास है, उसका पूरा चित्र नहीं बना सकेगी।

इसी प्रकार परमात्मा गुरु भी अपने अवतरण द्वारा अपना कर्त्तव्य करता और प्रत्यक्ष में उसका परिचय देता है। अन्य कोई भी मनुष्यात्मा नहीं बता सकेगी कि भारतवासियों का वास्तविक और आदि सनातन धर्म क्या है, किस ने स्थापन किया और कब। मनुष्यात्मा स्वयं भी उस धर्म में पूर्ण रूपेण स्वतः ही स्थित नहीं हो सकती - उस धर्म की पुनः स्थापना का महत्वपूर्ण कार्य करने का दम भरना तो उसके बस की बात ही नहीं।

- क्रमशः

प्रयागराज-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ मेडिकल विंग प्रभाग द्वारा "नशा मुक्त भारत" अभियान का प्रयागराज के महाकुंभ मेला क्षेत्र से शिव बाबा का झण्डा दिखाकर शुभारम्भ करते हुए भारत सरकार के केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, उत्तर प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह, कानपुर से ब्र.कु. उमा एवं ब्र.कु. प्रकाश, ओडिशा से ब्र.कु. अरुण, माउण्ट आबू से ब्र.कु. शिवांगी तथा अन्य।

शान्तिवन-राज.। महाराष्ट्र विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष अंबादास दानवे को ईश्वरीय सौगात, डायरी व ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ओमशान्ति मीडिया के सम्पादक राजयोगी डॉ. ब्र.कु. गंगाधर व वाइस प्रेसिडेंट ऑफ द ग्लोबल बुक ऑफ एक्सीलेंस डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके।

फिरोज़पुर-पंजाब। पूर्व विधायक परमिंदर सिंह पिंकी को जन्मदिन पर ईश्वरीय सौगात भेंट कर शुभकामनाएं देते हुए ब्र.कु. सुर्मिष्ठा दीदी।

सम्बलपुर-ओडिशा। सिद्धेश्वर बलिराम बोंदर,आईएएस को नव वर्ष की शुभकामनाओं के साथ ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पार्वती दीदी एवं ब्र.कु. दीपा।

गुआंगज़ौ-चीन। प्रवासी भारतीय दिवस 2025 के अवसर पर भारतीय दूतावास और भारत के महावाणिज्य दूतावास ने चीन में भारतीय समुदाय से विभिन्न क्षेत्रों में योगदान देने पर 11 लोगों का चयन किया, साथ ही ब्र.कु. सपना को भी संस्कृति और मूल्यों को बढ़ावा देने व भारत के प्राचीन ज्ञान के माध्यम से कई स्थानीय लोगों की मदद करने और पिछले वर्षों में चीन में राजयोग ध्यान को बढ़ावा देने जैसी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए चीन में भारत के महावाणिज्य दूत शंभू एल. हक्की द्वारा पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

फिरोज़पुर-पंजाब। बीएसएफ परिसर में तीन दिवसीय राजयोग शिविर के पश्चात् समूह चित्र में कमांडेंट अजय कुमार 116 बटालियन के साथ हैं स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. डिम्पल।

आमेट-राज.। एसडीएम गोविंद सिंह को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गौरी।